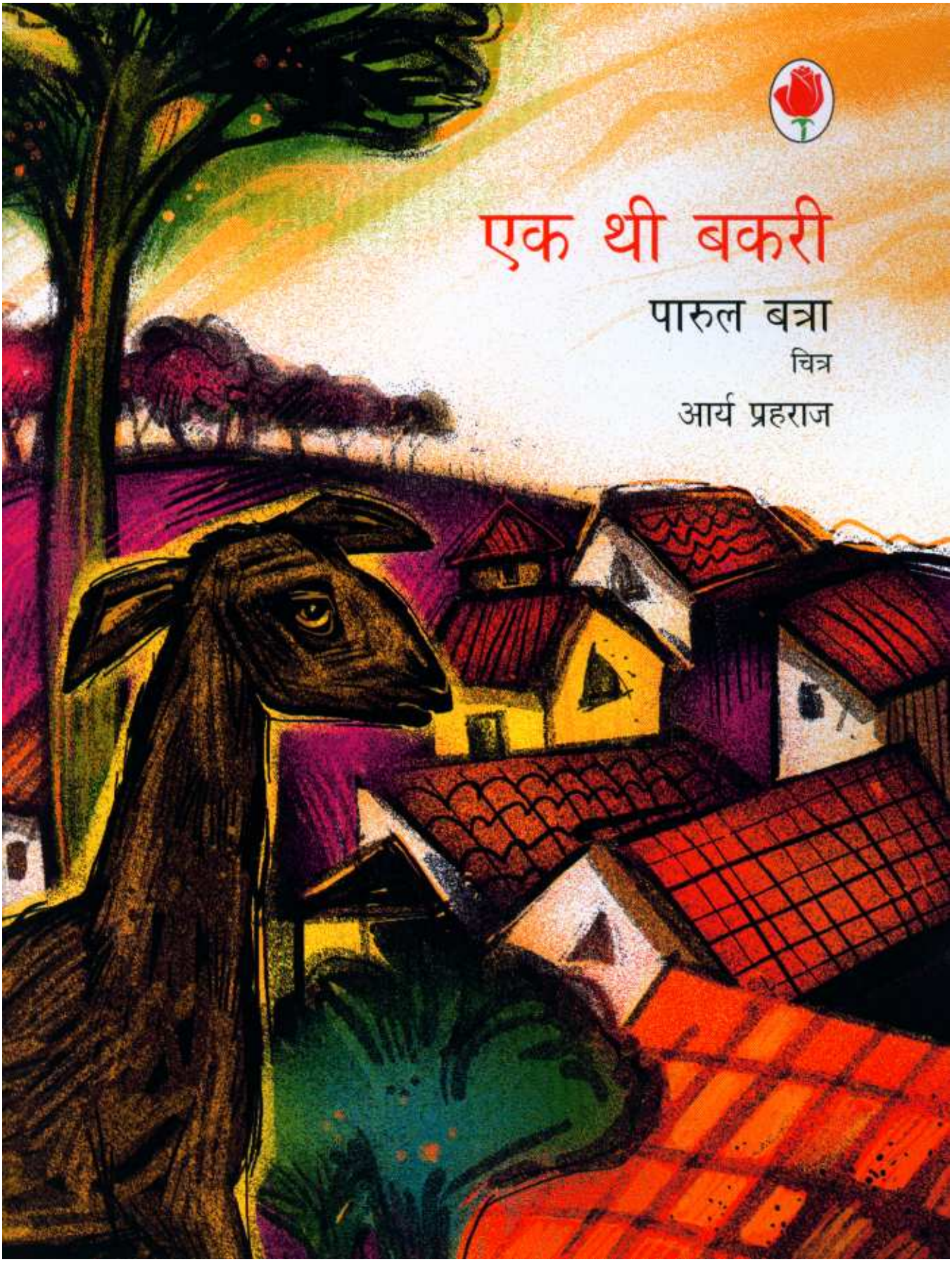
एक थी बकरी
पारुल बत्रा
चित्र
आर्य प्रहराज

ISBN 978-81-237-6553-2

पहला संस्करण : 2012 *(शक 1934)*

© पारुल बत्रा, 2012

Ek Thi Bakri *(Hindi Original)*

₹ 25.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित

नेहरू बाल पुस्तकालय

एक थी बकरी

पारुल बत्रा

चित्र
आर्य प्रहराज

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

एक थी बकरी, मेरी कहानी की बकरी होने के बावजूद उसकी कोई विशेषता न थी। एक साधारण-सी बकरी। वह भूरे रंग की नहीं थी, इसलिए उसका नाम भूरी नहीं था। वह सफेद नहीं थी, इसलिए उसका नाम चांदनी नहीं था। काली न होने के कारण उसे कल्लू के नाम से भी नहीं पुकारा जाता था। दरअसल वह एक मटमैली बकरी थी। इसलिए उसका नाम मुटल्ली..., ना...ना..., कोई भी नाम नहीं था।

बकरी कहां रहती थी? इस बारे में भी आपको परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं। इस बकरी के मालिक ने उसे अपने घर से निकाल बाहर किया था। पता नहीं क्यों? या तो मालिक के लिए वह किसी काम की नहीं थी या फिर उसकी आदतों की वजह से?

अब तो बकरी के दिन यूं ही गाना गाते हुए गुज़रा करते थे—"ना कोई उमंग है, ना कोई तरंग है, मेरी ज़िंदगी है क्या एक कटी पतंग है।" कई बार बकरी को उन

दिनों की याद आती जब वह मालिक के घर रहती थी। घास वाले बाड़े में दूसरे जानवरों के साथ बिताए गए कुछ खट्टे-कुछ मीठे दिन। हालांकि उनमें भी सुखद कम और दुखद यादें ज़्यादा थीं।

बकरी को खाना बहुत अच्छा लगता था। बचपन में बकरी के माता-पिता ने उसे 'बोबक बकरे' की कहानी सुनाई थी। वे कहा करते थे कि यह बकरी उसी की तरह लालची है। याद है ना वह कहानी? एक बार बोबक बकरे ने नागफनी चबा डाली थी! और बरसात के दिनों में घास के ढेर में मुंह डालने पर उसके नाक पर बिच्छू ने काट खाया था!! हालांकि बकरी सोचती थी कि उसने बोबक की तरह जी मिचलाने

वाला पौधा तो कभी खाया ही नहीं था। शायद वह उसे भी खाना चाहती थी!

हमारी बकरी को कहानियां सुनने-पढ़ने का शौक बचपन से ही था। रूसी कहानी 'चमत्कारी बकरा' सुनने के बाद तो वह 'चमत्कारी बकरे' की तरह ही पांच सींग और चांदी के खुर पाने का ख्वाब भी देखा करती थी। एक दिन उसने रंगे सियार की कहानी पढ़ी, जिसमें सियार नीले रंग के हौज़ में गिर गया था, तब उसने भी वैसा ही करने की ठानी। उन दिनों मालिक के घर में पुताई हो रही थी। वह आंगन में रखे चूने के टब में कूद पड़ी। उसने तो सोचा था कि धूसर रंग उजला हो जाएगा। रंग तो उजला होने से रहा, मालिक की मार पड़ी सो अलग।

जब बकरी थोड़ी बड़ी हुई तो उसे 'अब्बू खां की बकरी' की कहानी याद आ गई। "यदि चांदनी बकरी भेड़िये को लड़ाई में हरा सकती है तो फिर मेरे सामने यह मालिक का पालतू कुत्ता शेरू क्या चीज़ है?" हमारी बकरी ने आव देखा न ताव, दौड़ते हुए शेरू पर निशाना साध लिया। उस वक्त जनाब शेरू खाना खा रहे थे। उन्होंने इस बकरी की गुस्ताखी को कतई माफ नहीं किया और बकरी का पिछला दायां पैर चबा लिया।

हमारी बकरी भी कहां हार मानने वाली थी! कुछ दिन बाद ही उसे लगने लगा कि मालिक शेरू के साथ रोजाना सुबह-शाम घूमने जाता है,

उसके साथ खेलता भी है। मालिक ने उसे कभी भी अपने साथ घुमाया नहीं और ना ही कभी फेंकी हुई गेंद उठा कर लाने को कहा।

यहां तक कि मालिक के बाड़े में गायों का भी खास ख्याल रखा जाता है। उनके पास रहने के लिए तबेला था। हरे चारे की व्यवस्था भी रहती। शेरू के पास भी अपना घर है। खाने का कटोरा यानी डिनर सेट भी है।

और बकरी के पास...?

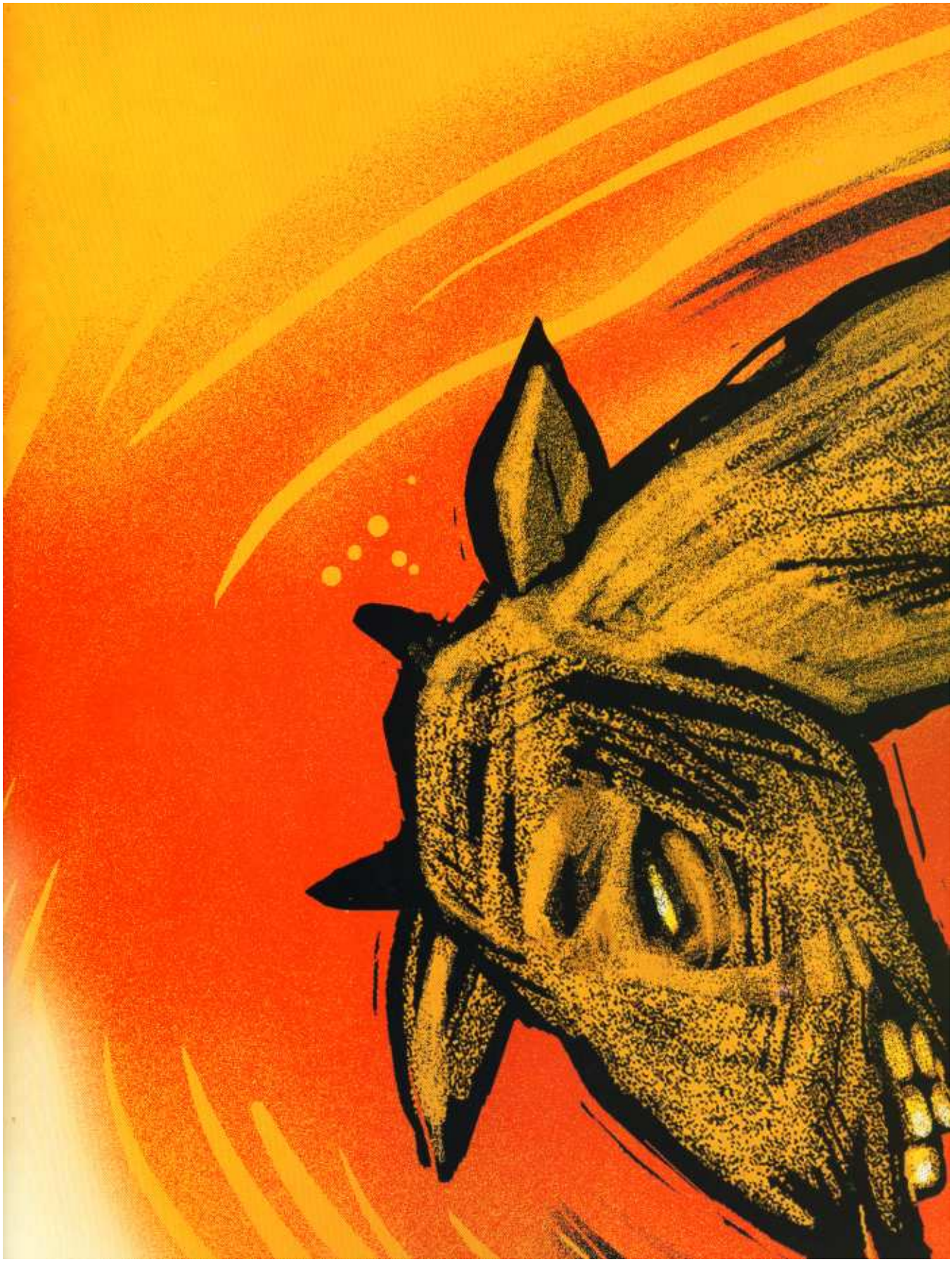

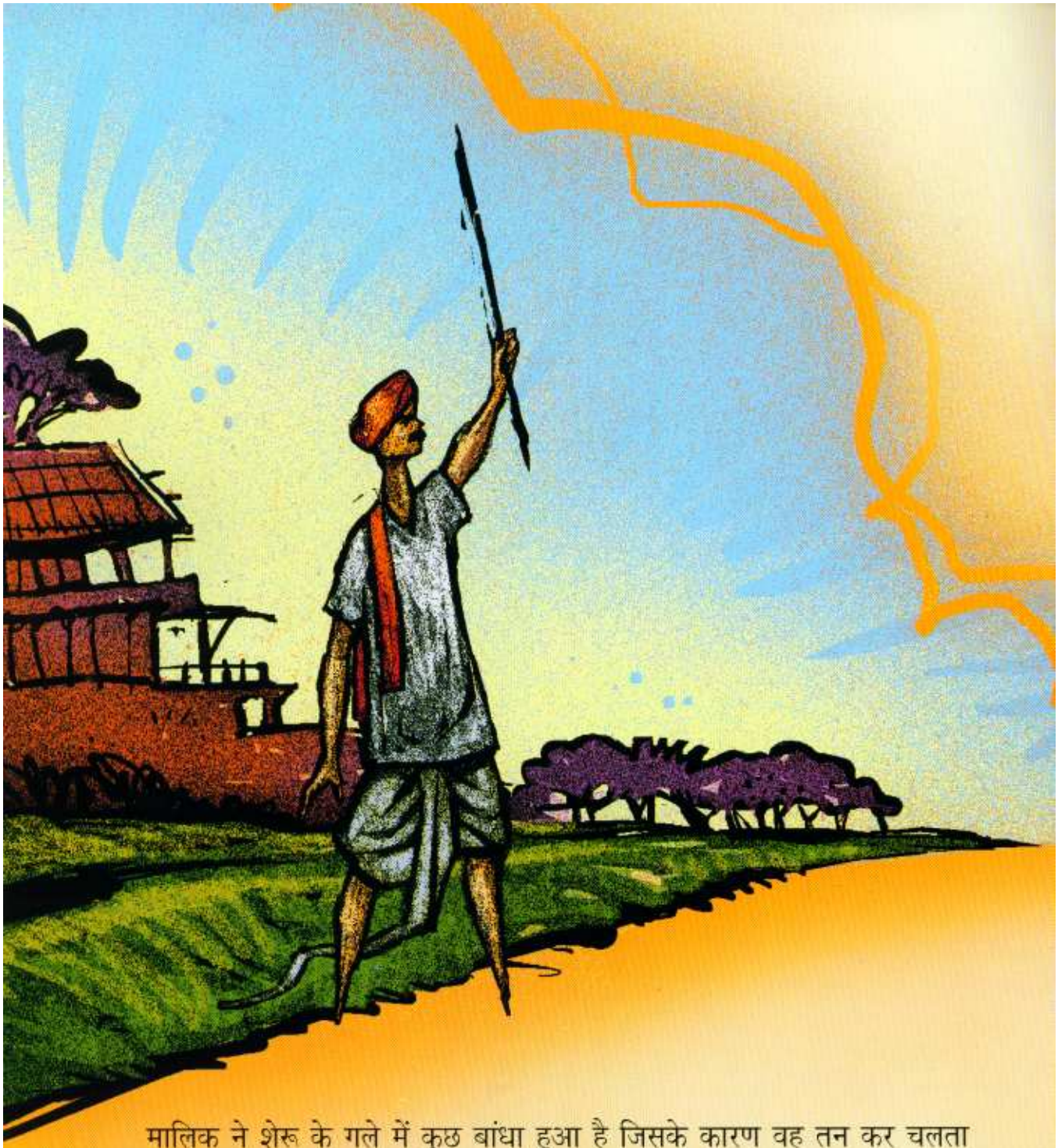

मालिक ने शेरू के गले में कुछ बांधा हुआ है जिसके कारण वह तन कर चलता है। गायों के गले में भी घंटी बंधी है। लेकिन उसके गले में मालिक ने क्यों कुछ नहीं बांधा? हां अलबत्ता शेरू के काट खाने के बाद उसे कई दिनों तक रस्सी से बांध कर ज़रूर रखा गया था।

"उसकी तो किसी को चिंता ही नहीं है।"

इससे पहले कि वह कुछ और करने की सोचे, मालिक ने उसे निकाल बाहर किया।

अब बकरी ने भी सोच लिया था कि वह वापिस जाने से तो रही। भले ही सड़क पर उसका कोई संगी साथी नहीं है। खाने-पीने के लिए भी खूब ढूंढ़ना पड़ता है, लेकिन वह अपनी मर्जी की मालकिन तो है। ठेलों के नीचे चुपचाप घुस कर कुछ फल चुराने में, आंख बचा कर सब्जी और लोगों के घरों की बाड़ फांद कर बड़ी सफाई से घास और पौधों का सफाया करने में कितना मजा आता है! उसे पालतू कुत्तों को छकाने में भी मजा आने लगा क्योंकि उसे पता होता था कि ये उसकी तरह आज़ाद नहीं हैं। बस भौं-भौं करके रह जाएंगे। कई बार तो वह उनकी नाक के नीचे से उनका खाना चुरा ले जाती।

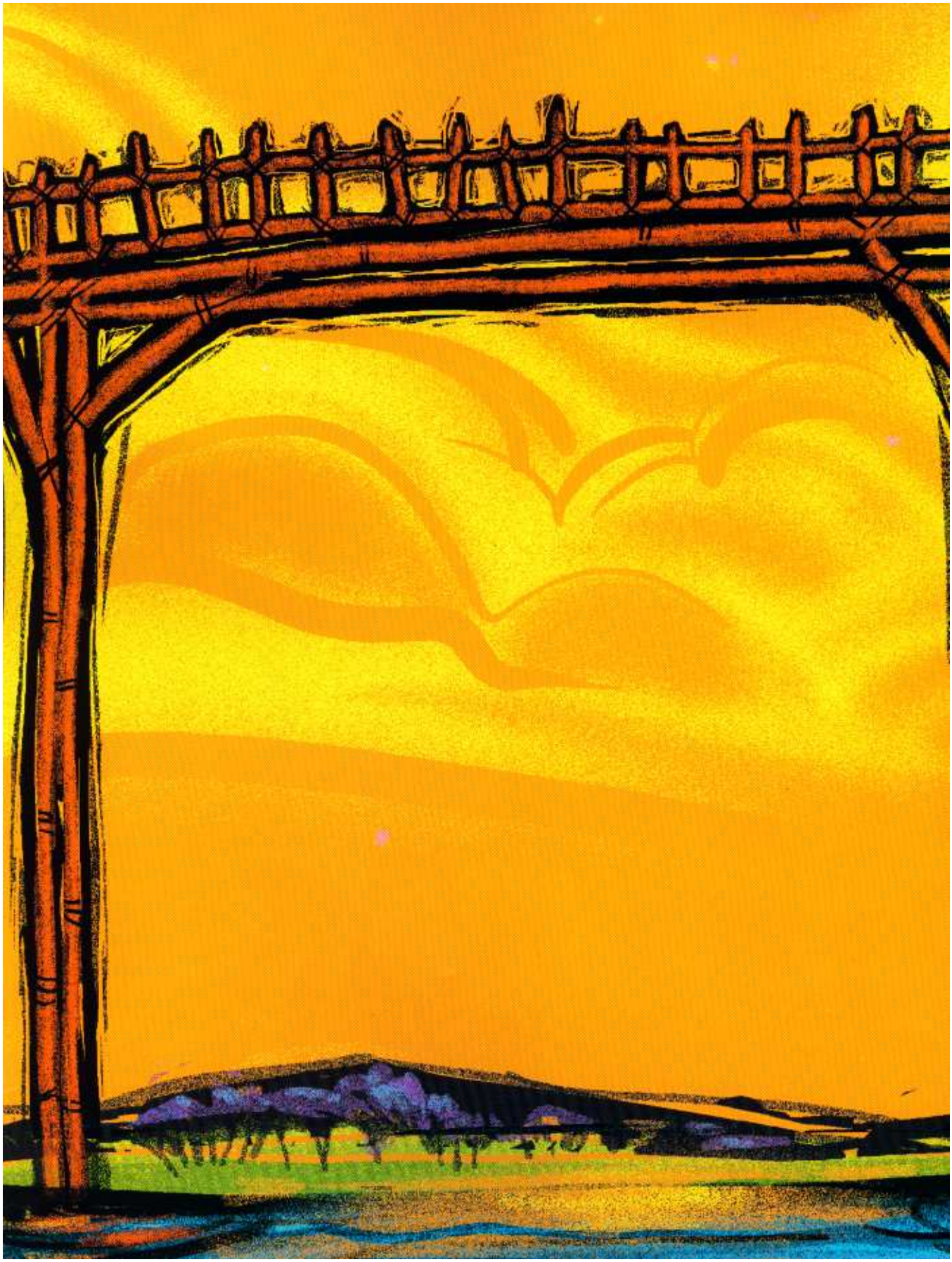

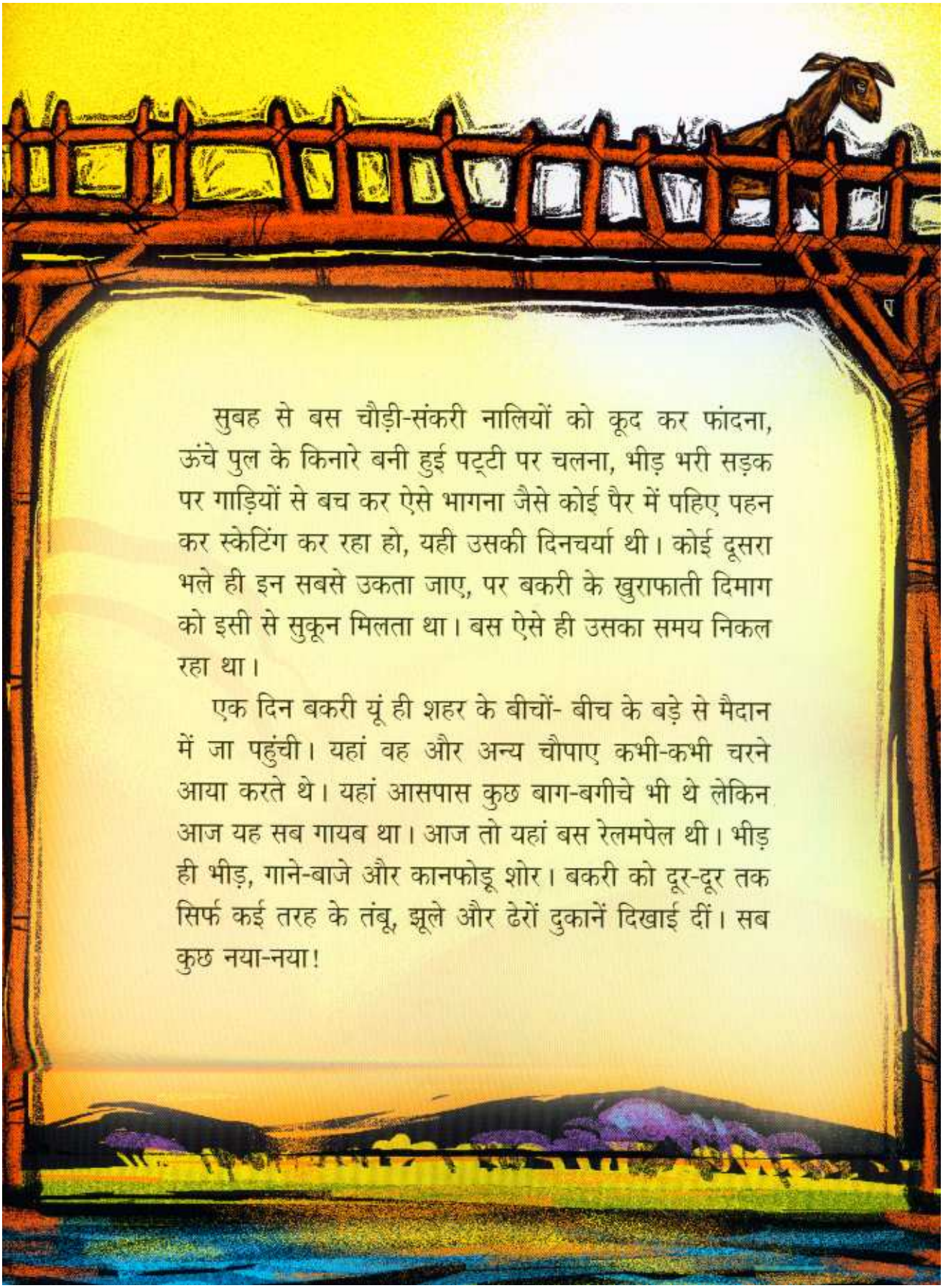

सुबह से बस चौड़ी-संकरी नालियों को कूद कर फांदना, ऊंचे पुल के किनारे बनी हुई पट्टी पर चलना, भीड़ भरी सड़क पर गाड़ियों से बच कर ऐसे भागना जैसे कोई पैर में पहिए पहन कर स्केटिंग कर रहा हो, यही उसकी दिनचर्या थी। कोई दूसरा भले ही इन सबसे उकता जाए, पर बकरी के खुराफाती दिमाग को इसी से सुकून मिलता था। बस ऐसे ही उसका समय निकल रहा था।

एक दिन बकरी यूं ही शहर के बीचों- बीच के बड़े से मैदान में जा पहुंची। यहां वह और अन्य चौपाए कभी-कभी चरने आया करते थे। यहां आसपास कुछ बाग-बगीचे भी थे लेकिन आज यह सब गायब था। आज तो यहां बस रेलमपेल थी। भीड़ ही भीड़, गाने-बाजे और कानफोड़ू शोर। बकरी को दूर-दूर तक सिर्फ कई तरह के तंबू, झूले और ढेरों दुकानें दिखाई दीं। सब कुछ नया-नया!

"क्या हो रहा है? पता करना होगा! लगता है बहुत मज़ा आएगा!!" उसने चारों तरफ नज़र दौड़ाई तो देखा एक बड़ा-सा दरवाजा और लकड़ी की सीढ़ियां थीं। उसे पार कर लोग अंदर जा रहे थे। चारों तरफ चहारदीवारी थी। जैसे ही बकरी ने उसी दरवाजे से अंदर जाना चाहा तो चौकीदार ने डंडा दिखाकर उसे डराया और गुस्से में कुछ बड़बड़ाया। अगर वह गाय होती तो बिदक कर दौड़ती, अगर कुत्ता होती तो दुम दबा कर भागती और घोड़ा होती तो हिनहिना कर एक दुलत्ती झाड़ती। लेकिन वह थी तो बकरी ही, सो सिर झुका कर दूसरी ओर चल दी।

तभी बकरी को लकड़ी की सीढ़ियों के नीचे खाली जगह दिखाई दी। उस छोटी सी जगह से लगभग रेंगते हुए वह आसानी से अंदर पहुंच गई। बहुत भीड़ थी—लोग ही लोग, बच्चे और बड़े सभी थे वहां। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अब शुरू कहां से किया जाए...।

सामने ही आइसक्रीम की दुकान थी। खूब सारे बच्चे अपने मम्मी-पापा के साथ वहां आइसक्रीम खा रहे थे। बकरी ने अपना शिकार तलाश लिया—एक छोटा बच्चा ठंडी-ठंडी आइसक्रीम के चटकारे ले रहा था। बकरी ने उसे देखा, लगभग उसी ही

ऊंचाई का था वह बच्चा। बकरी चलते हुए उससे कुछ यूं टकराई कि आइसक्रीम नीचे गिर गई।

"ओफ्फो देखो क्या किया तुमने?" मां ने कहा। बच्चा अब रो रहा था।

"कोई बात नहीं हम दूसरी ले लेते हैं," मां ने कहा और वे वहां से चले गए। बकरी को चॉकलेट वाली आइसक्रीम बहुत पसंद आई। इसी तरह उसने पॉपकार्न और चने की भी जुगाड़ लगाई।

बकरी की नजर अब सबसे बड़े तंबू की ओर गई, जो रोशनी से चमक रहा था।

"यह आखिर हो क्या सकता है?" बकरी ने सिर ऊंचा कर तंबू की चोटी को निहारना चाहा। लोग कतारों में अंदर जा रहे थे। इस बार भी बकरी ने पीछे से रेंग कर अंदर जाना ठीक समझा।

बीचों-बीच स्टेज पर तरह तरह की चीजें थीं। कहीं कुछ लोग हवा में झूल रहे थे तो कहीं साईकिल पर बीस लोग सवार थे। इसके बाद कुछ लड़कियों ने बड़े-बड़े छल्लों को गोल-गोल घुमाना शुरू किया। उन्हें देखते-देखते बकरी का सिर भी गोल-गोल घूमने लगा। अब वे लड़कियां उन बड़े-बड़े छल्लों में से कूद कर निकल रहीं थीं।

बकरी अपनी जगह पर बेहद उत्साहित हो गई। उसके कान सीधे खड़े हो गए और वह अपने खुरों के नीचे ज़मीन कुरेदने लगी।

'भई वाह! यह तो मैं भी कर सकती हूं।' बकरी ने आव देखा ना ताव और बीचों-बीच दौड़ लगा दी। इसके पहले कि कोई कुछ समझ पाए कि माजरा आखिर है क्या? वह तीन छल्लों के अंदर से कूद कर निकल गई। लोग और जोर-जोर से तालियां बजाने लगे। स्टेज पर खड़े लोगों को यह पसंद नहीं आया। कुछ लोग बकरी को पकड़ने के लिए भागे। बकरी तब तक वहां से चंपत हो चुकी थी।

बकरी ने देखा कि चहल-पहल वाली जगह पर एक आदमी जमीन पर बैठा था और उसके पास ही जमीन पर कोई छोटी-सी गोल चीज़ रखी थी। आते-जाते लोग रुक कर उस पर खड़े होते, नीचे झांक कर

कुछ देखते और चले जाते। एक दुबली सी लड़की उस गोल चीज़ पर आ कर खड़ी हुई और नीचे झांका। जाते वक्त उस लड़की के चेहरे पर संतुष्टि के भाव थे। तभी एक मोटा-सा आदमी उस गोल चीज़ पर खड़ा हुआ और कुछ उदास सा हो कर गया।

'यह क्या हो सकता है?' बकरी ने सोचा। बिल्ली की तरह दबे पांव चल कर वह उस आदमी के पीछे जा कर खड़ी हो गई। जैसे ही ध्यान कुछ दूसरी तरफ गया, वह कूद कर आगे आई और उस गोल चीज़ पर खड़ी हो गई। वह चीज कुछ हिली, बकरी ने मुश्किल से अपने चारों पैर संभाले और नीचे झांका। कुछ समझ नहीं आया, पर उसे लगा कि कम से कम उसने वह तो किया जो सब मेले में आ कर करते हैं।

आगे बढ़ी तो उसने पाया कि उसके चारों ओर झूले ही झूले हैं। कुछ तो बहुत ही ऊंचे थे और बड़ी तेजी के साथ गोल-गोल ऊपर-नीचे, नीचे-ऊपर आ-जा रहे थे। वहां कारों और हवाई जहाज की शक्ल में कुछ छोटे झूले भी थे जो नीचे ही गोल-गोल घूम रहे थे। वहां पटरियों पर चलने वाली एक छोटी रेलगाड़ी भी थी।

बकरी को झूले देखते ही झट-से अपनी पसंदीदा किताब 'कजरी गाय झूले पर' वाली कहानी याद आ गई। जब गाय झूला झूल सकती है तो मैं क्यों नहीं? और कजरी गाय तो जंगल में पेड़ से लटकने वाले रस्सी के झूले पर झूली थी, मैं तो ये मेले वाले झूले झूलूंगी।

वैसे भी भीड़-भाड़ भरी जगहों पर किसी बकरी को घूमते देख लोगों के मन में तो बस यही ख्याल आता है—कुछ खाने को ढूंढ़ रही होगी बेचारी। लेकिन बकरी के इरादे तो कुछ और ही थे।

बकरी ने छोटे वाले झूले से शुरुआत करने की ठानी। कारों वाले झूले के पास लगी छोटी बाड़ बकरी ने आसानी से फांद ली। इस झूले की ऊंचाई ज्यादा नहीं थी। झूला अभी रुका हुआ था और झूले का मालिक अपने ग्राहकों यानि छोटे बच्चों को टिकट देने या झूले में बैठने में उनकी मदद करने में व्यस्त थे। यह देख कर ही बकरी जोश से भर गई। बकरी उछल कर एक कार-झूले पर चढ़ गई। वह दुबक कर कार की सीट के नीचे बैठ गई। थोड़ी देर बाद झूला चलना शुरू हुआ और गोल-गोल घूमने लगा। खुशकिस्मती से बकरी वाली कार खाली ही रही।

धीरे-धीरे वह तेज होता गया, 'वाह! मजा़ आ रहा है।' सीट के नीचे बैठी बकरी का दिल झूले की गति के साथ बल्लियों उछलने लगा। कजरी गाय को भी इतना मजा नहीं आया होगा। जैसे ही झूला रुका बकरी कार में खड़ी हो गई और खुशी से मिमिआई।

'ओह! अभी भी सिर झूले की तरह गोल-गोल घूम रहा है।' सभी बच्चे हैरान-परेशान! उसे ऐसे देखने लगे जैसे अभी-अभी उन्होंने एक बकरी के साथ झूला, झूला हो। बकरी ने सबको ऐसे देखा जैसे वह अक्सर यहां झूला, झूलने आती हो। और बड़े आराम से झूले से कूद कर वहां से खिसक ली।

और आज भी मेले में की गई कारिस्तानियां बकरी नानी बड़े चाव से अपने नाती-पोतों को सुनाती है।

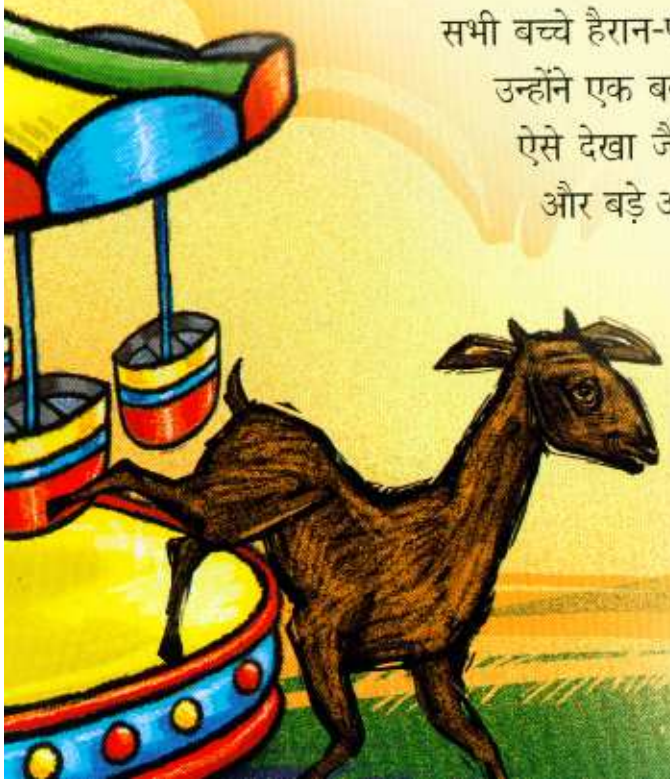

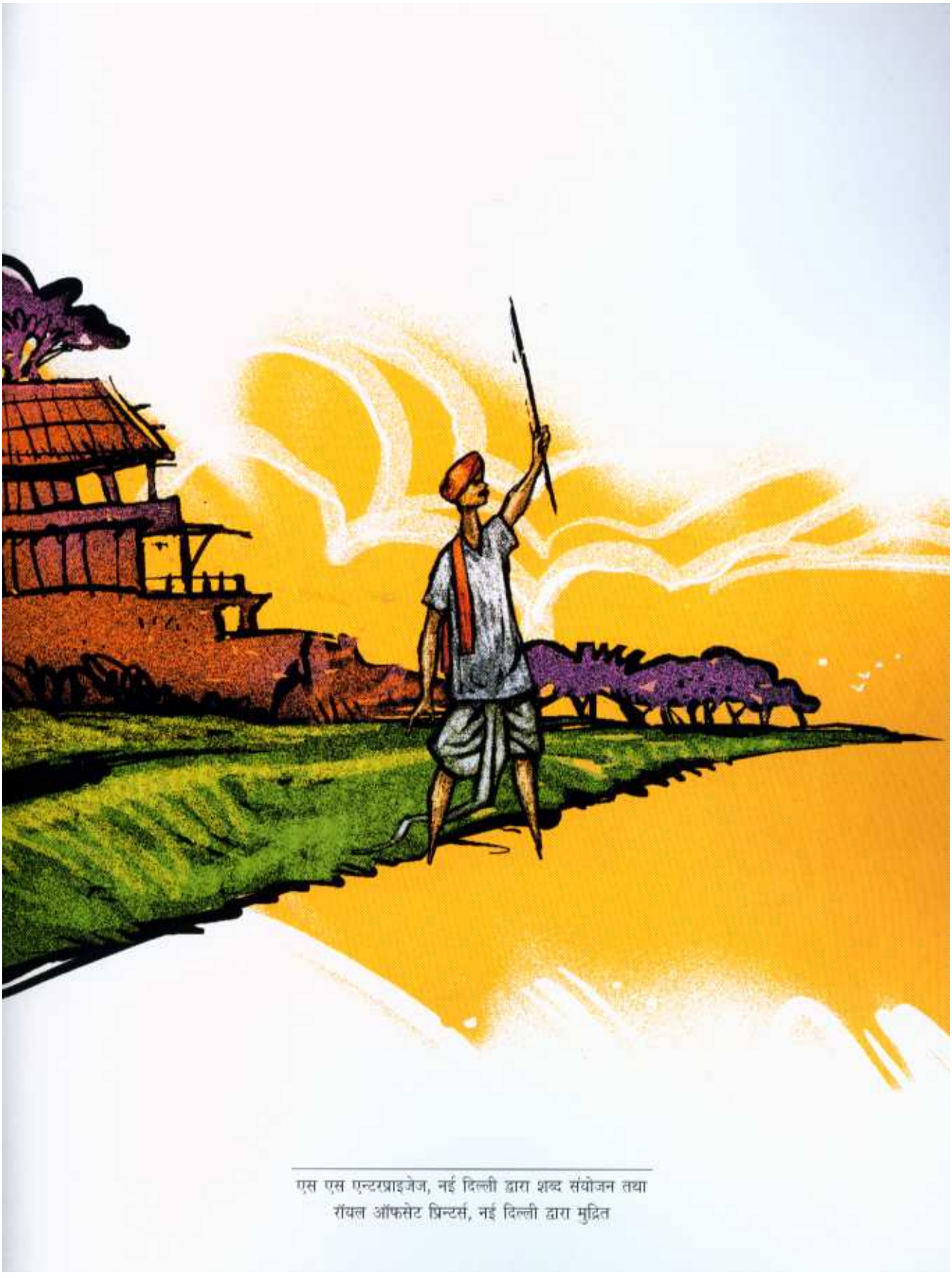

एस एस एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली द्वारा शब्द संयोजन तथा
रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

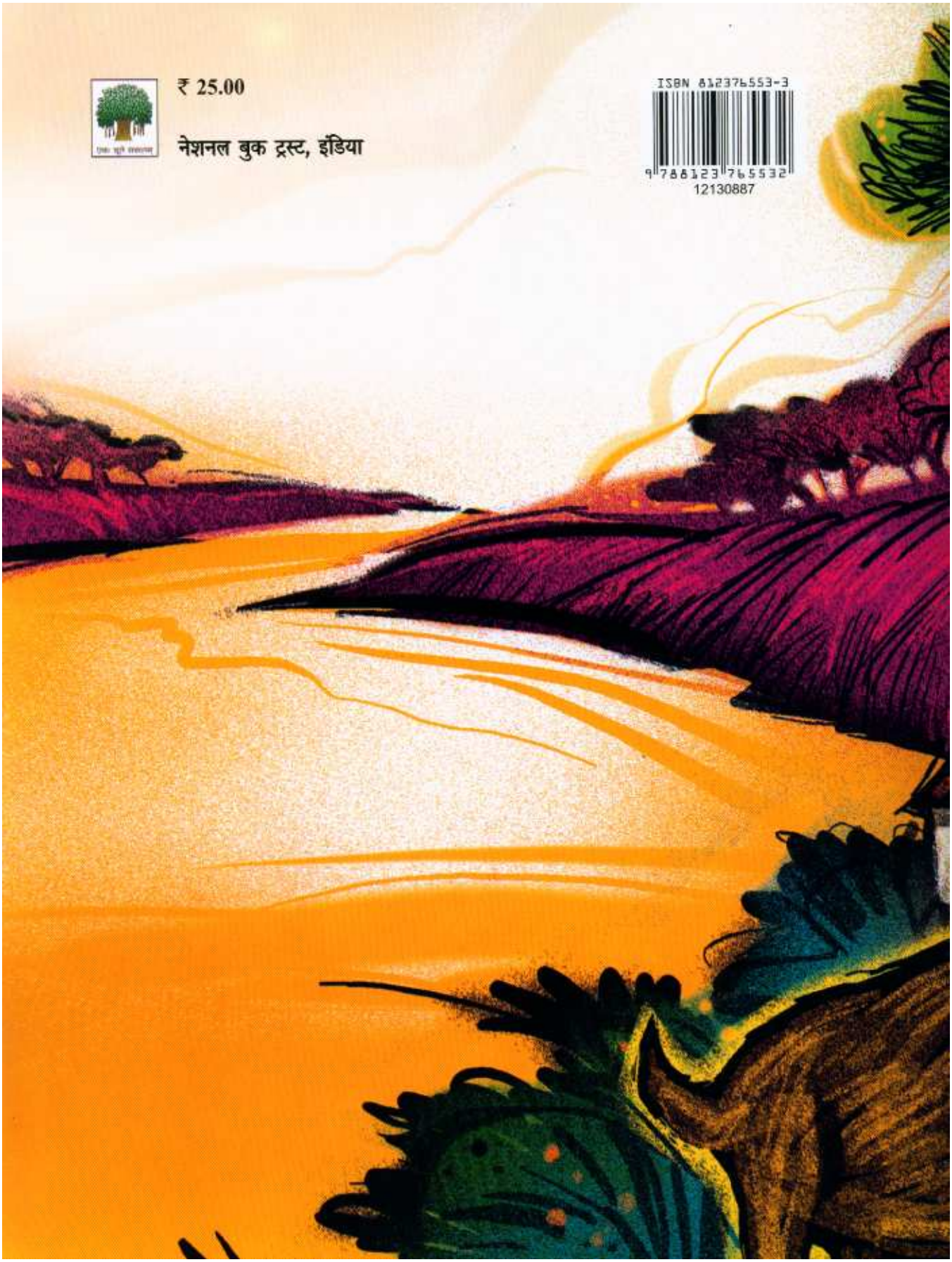

₹ 25.00

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 812376553-3

9788123765532

12130887